ShodhVarta
An International Peer-Reviewed Journal
www.shodhvarta.in

Vol 02 Issue 03

Contribution of Tilak in the Freedom Struggle: In the context of Srimad Bhagavad Gita Rahasya

Received: 19 June 2023
Reviewed: 22 June 2023
Accepted: 23 June 2023
Published: 30 June 2023
Paper ID: 230605

Amrita Kumari
Research Fellow
Department of Philosophy, Nava Nalanda Mahavihara
Nalanda, Bihar
Email: amritamishra4127@gmail.com

Abstract

The name of Bal Gangadhar Tilak is renowned as a great karma yogi. He made a significant contribution to the Indian national movement. During the time when India was under British rule, he made numerous efforts to awaken the spirit of action among the Indian people. In this context, he composed the book "Gita Rahasya" (The Secret of the Bhagavad Gita). However, Tilak Ji was already inspired by the Gita, but he did not agree with the interpretation of renunciation emphasized in it. According to him, when a nation is trapped in the chains of slavery, it is essential to make people understand the path of action rather than the path of renunciation. Before Tilak, several commentaries were written on the Gita, but they primarily focused on the concept of liberation through renunciation. However, Tilak considered the Bhagavad Gita to be predominantly a scripture of action (karma-pradhan). The Gita discusses yoga on multiple occasions, but its main significance lies in its connection with karma, presenting it as the path of karma yoga. Bal Gangadhar Tilak, based on Hindu scriptures, expounded the complete philosophy of karma yoga in his book "Gita Rahasya." He studied various commentaries on the Gita and compiled diverse viewpoints. He made an effort to eliminate any ambiguities so that readers of the Gita could understand that it is not just a path of renunciation but a path of action that teaches the performance of duties.

Keywords – Gita Mystery, Retirement, Tendency, Karma Yoga, Culture, Civilization, Duty, Evil.

स्वाधीनता संग्राम में तिलक का योगदान: श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य के सन्दर्भ में

सारांश (Abstract) –

बाल गंगाधर तिलक का नाम एक महान कर्मयोगी के रूप में विख्यात है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में इनका प्रमुख योगदान रहा है। जब भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था तब इन्होंने भारत की जनता में कर्म-भाव को जगाने का अनेक प्रयास किया। इसी परिप्रेक्ष्य में उन्होंने गीता-रहस्य की रचना की। अपितु तिलक जी महाराज पहले से ही गीता से प्रेरित थे, परन्तु वे इसके निवृति पक्ष को विशेष सहमत नहीं थे। "उनके अनुसार जब देश गुलामी की जंजीर में जकड़ा हुआ हो उस समय आप लोगों को मोक्ष मार्ग की बात नही समझा सकते बल्कि उन्हें कर्म-मार्ग समझाना आवश्यक है।" इसके पहले गीता पर अनेक भाष्य लिखे गए थे परन्तु उसमें मोक्ष के प्रधान मान कर निवृत्ति-मार्ग बाताए गए थे जबकि तिलक ने श्रीमद्भगवद्गीता को कर्म-प्रधान बताया। गीता में योग की अनेक बार चर्चा की गई है, परंतु प्रमुख रूप से योग का अर्थ गीता में कर्म के साथ जुड कर कर्मयोग के रूप में बताया गया है। बाल गंगाधर तिलक ने हिंदू-ग्रंथों का आधार लेकर गीता का संपूर्ण कर्म-योग का दर्शन अपने ग्रंथ गीता-रहस्य में लिखा है। उन्होंने गीता के विभिन्न भाष्यों का अध्ययन करके विविध मतों का संग्रह किया उसके पश्चात उन्होंने अपूर्णता को पूर्ण करने का प्रयास किया। जिससे गीता पढने वाले पाठकों का भ्रम दूर हो सके, कि गीता न मात्र निवृत्ति-मार्ग है, बल्कि यह प्रवृत्ति-मार्ग है, जो कर्म करना सिखाती है।

बीज शब्द (Keywords)- श्रीमद्भगवद्गीता, गीतारहस्य, निवृत्ति, प्रवृत्ति, कर्मयोग, संस्कृति, सभ्यता, कर्तव्य, दुष्कृति

प्रस्तावना – (Introduction)

समकालीन भारतीय दर्शन में कर्म-दर्शन के महान प्रतिपादक के रूप में बाल गंगाधर तिलक का नाम प्रचलित है। तिलक की प्रमुख शिक्षाओं में श्रीमद्भगवद्गीता के अंतर्गत धार्मिक अवधारणाओं की विशेषता है। "बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 ई० को महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के चिखली गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गंगाधर रामचंद्र तिलक था। वे अपने समय के बहुत लोकप्रिय शिक्षक थे। इन्होंने गणित व व्याकरण पर बहुत सी पुस्तकें भी लिखीं थी। 1872 ई० में इनके पिता का निधन हो गया, उस समय उनकी आयु मात्र 16 वर्ष की थी। (sugamgyan.com)

बाल गंगाधर तिलक ने अपने जीवन काल में अनेक विषयों को प्रस्तुत किया। वे समकालीन भारतीय दर्शन में एक महान योगी कर्मयोगी के रूप में विख्यात हुए। उनका जीवन मानवीय चेतना के संगठित समूह के प्रति समर्पण भाव के लिए था। उनका मानना था कि "भारत एक महान देश हैं, यदि पृथ्वी पर कोई ऐसी भूमि है जिसे हम धन्य भूमि कह सकते है तो वह भारत भूमि है, जहाँ क्षमा, दया, धैर्य एवं मानव जाति के लिए शुद्धता आदि प्रवृतियों सर्वाधिक विकास हुआ एवं जिस देश में सर्वाधिक अध्यात्मिकता एवं सर्वाधिक आत्मान्वेषण का विकास हुआ है वह भूमि भारत ही है।" (तिलक, 7) इनकी शिक्षा आधुनिक कालेज में हुई थी तथा कुछ समय तक स्कूल और कालेजों में गणित शिक्षक रहे थे। तिलक अंग्रेजी शिक्षा का भी विरोध करते थे क्योंकि यह भारतीय सभ्यता-संस्कृति के प्रति अनादर सिखाती थी। इन्होंने दक्षिण शिक्षा सोसायटी की स्थापना की, जिससे भारत में शिक्षा का स्तर में सुधार हो।" (अविनाश राय) भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा अंग्रेजी शिक्षा की ओर बढ़ रहा था। तिलक ने आभास किया कि लोगों में अपनी संस्कृति समाप्त होती जा रही है, एवं अंग्रेजी शिक्षा की भावना सर्वत्र व्याप्त हो रही है। यह भावना से देश की स्वतंत्रता को समाप्त कर सकती है। इसलिए तय किया की अब सन्यास-योग का नहीं बल्कि कर्म-योग का बताने का समय आ गया है। व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य का चिंतन करना एवं कर्त्तव्यों का ज्ञान होना अधिक महत्वपूर्ण है। लोगों को उनके कर्त्तव्य से अवगत होने के लिए, पुरुषार्थ की ओर जाने वाले समाज की निर्वृत्ति-मार्ग की नहीं बल्कि प्रवृत्ति-मार्ग की आवश्यकता है। राष्ट्र भावना उनका अखंड प्रेरणा स्रोत थी तथा उनकी राजनीति में सहजभाव से भारतीय संस्कृति का अभिमान दिखता था।

उद्देश्य- (Objectives)

इस शोध पत्र के माध्यम से "स्वाधीनता संग्राम में तिलक का योगदान: श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य अथवा कर्मयोगशास्त्र के सन्दर्भ में" विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे-

1. समाज के लोगों को स्वाधीनता संग्राम के महत्व और आंदोलन के लिए आवश्यक योग्यता का ज्ञान प्रदान करना।
2. समाज के लोगों को स्वाधीनता संग्राम के महत्व और आंदोलन के लिए आवश्यक योग्यता का ज्ञान प्रदान करना।
3. तिलक के ग्रंथों के माध्यम से योग्यताओं का प्रशिक्षण प्रदान कर स्वाधीनता संग्राम के समय लोगों में जोश और आत्मविश्वास विकसित करना।
4. स्वाधीनता संग्राम में तिलक के योगदान को प्रस्तुत करके लोगों के बीच उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को प्रमोट करना।

पृष्ठभूमि (Background)

ब्रिटिश साम्राज्य देश की व्यवस्था, पुरातन वैभव एवं संस्कृति पूर्णत: कुचल रही थी। वहाँ पर इन्होंने अपनी संस्कृति को लाने का प्रयास किया। 1894-95 में एक सार्वजनिक गणेश उत्सव का आयोजन किया, जिससे लोगों में एकता बढ़े एवं अपने संस्कृति के प्रति उनका विश्वास दृढ़ हो। उन्होंने गीता पर मूल भाषा में गीता-रहस्य लिखा। गीता के मूल उद्देश्य को बाहर जाता देखकर उन्होंने गीता के निवृत्ति-मार्ग को छोड़कर प्रवृत्ति-मार्ग का अनुसरण करना बताया। गीता में बताए गए कर्म प्रभाव को बताया तथा गीता का मूल उद्देश्य उस समय के लिए क्या है इस पर उन्होंने अपना भाष्य लिखा ताकि भारत की जनता जागृत हो जाए एवं स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए एकजुट होकर अपना कर्म करे। जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग के उपदेश दिए थे, उसी प्रकार स्वाधीनता के भाव जगाने के लिए उन्होंने जनता को कर्मयोग समझाने प्रयास किया।

तिलक ने अंग्रेजी एवं मराठा में दो दैनिक समाचार पत्र निकलवाए। मराठा एवं केसरी जो जनता में अति लोकप्रिय भी रहा। इसमें उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा में भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना एवं अंग्रेजी शासन की क्रूरता की कड़ी निंदा की थी तथा ब्रिटिश सरकार से भारतीयों को पूर्ण स्वराज देने की मांग

की एवं लोगों में भी विरोध की भावना को जगाने का कार्य किया। अपने सरकार विरोधी लेखों (केसरी में छपे) के कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा (विनय तिवारी) उनकी अभिवृत्ति मुख्यरूप से स्वराज्य हेतु लड़ाई के प्रति थी। तिलक स्वाधीनता संग्राम के प्रख्यात परिवर्तनकारियों में से एक माने जाते हैं।"(Brown, 1961) वे 1890 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े, जबकि वे कांग्रेस के विरोधी थे। 'एज ऑफ कंसेन्ट विधेयक' के विरोध करते थे, क्योकि उसमे हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के प्रति अतिक्रमण फैलाया रहा था।

तिलक ने ब्रिटिश सरकार की नीतियों का जम कर विरोध किया एवं अपनी पत्रिका केसरी में 'देश का दुर्भाग्य' नमक एक लेख लिखा। जिसके अंतर्गत 27 जुलाई 1897 ई० में राजद्रोह के केस में भारतीय दंड संहिता धारा 124-ए के तहत गिरफ्तार किया गया। तिलक को छः वर्ष का कठोर कारावास हुआ जिसके अंतर्गत उन्हें माण्डले (बर्मा) में रखा गया।"(web.archive.org) अपने छः वर्षो के कारावास के अन्तराल में तिलक ने सरकार से कुछ किताबों की मांग की, परन्तु सरकार ने ऐसी कोई भी पत्र लिखने पर रोक लगा दी जिसमें राजनैतिक गतिविधि हो। इसी कारावास के दौरान उनकी पत्नी का देहांत हो गया। वे अपनी पत्नी के अंतिम दर्शन भी नही कर पाए क्योकि उनको यह खबर जेल में ही मिली।" (news.jagatgururampalji.org) तिलक को इस बात का बहुत दुःख भी हुआ कि आख़िरी समय में वे अपनी पत्नी से नही मिल पाए, फिर भी वह देशप्रेम एवं जनहित के प्रति समर्पित रहे। अपने नए विचारों का प्रस्तुतीकरण करते रहे। उन्होंनें 'द आर्कटिक होम इन वेदास' आदि ग्रंथों के आधार पर विचारों को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया।

विश्लेषण (Analysis)

श्रीमद्भगवद्गीता एक धर्म-ग्रंथ अथवा एक पुस्तक न हो कर एक दार्शनिक ग्रन्थ के साथ-साथ जीवन शैली भी है, जो हर उम्र के व्यक्तियों को जीवन का सन्देश देती है। गीता अपनी संस्कृति-सभ्यता सीखाती है। महर्षि अरविदों ने कहा है – गीता उन सभी के लिए मार्ग दिखाने का कार्य करती है जो समझते हैं कि गीता एक ग्रंथ है एवं यह मात्र मोक्ष प्राप्ति का ही मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि यह सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों को सभ्यता एवं संस्कृति सिखाती है। (mppscexams.com) गाँधी जी ने गीता को गीता-माता कहा है, जो भी इनकी शरण में जाता है उसको अपनी ज्ञान से तृप्त करती है। जो मनुष्य जिस प्रयोजन से गीता को पढता है अथवा चाहता है उसे उसके अनुरूप ही मिल जाता है। गीता-ध्यान में स्मृतिकालीन ग्रन्थ का अलंकार युक्त यथार्थ वर्णन किया गया है कहा है – **"सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः। पार्थोवत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतम् महत्व ।।"** (गी.म./6) अर्थात् जितने उपनिषद् हैं वे गौएँ हैं, श्रीकृष्ण स्वयं दूध दूहने वाले (ग्वाला) हैं, बुद्धिमान् अर्जुन (उन गौओं का) भोक्ता बछड़ा (वत्स) हैं, जो दूध दूहा गया वही मधुर गीत अमृत है। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं कि भारत में अनेक भाषाओं में गीता के अनुवाद, टीकाएँ और विवेचन हैं तथा भारत ही नही, अपितु जब पश्चिमी विद्वानों को संस्कृत भाषा का ज्ञान होने लगा है तब से ग्रीक, लैटिन, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी इत्यादि यूरोपीय भाषाओं में भी गीता अनेक अनुवाद प्रस्तुत किए गए हैं। वर्तमान में यह ग्रन्थ सम्पूर्ण संसार में विख्यात है।

संपूर्ण भारतवर्ष कर्म-दर्शन के सिद्धांत की आधार शिला पर विश्वास करता है। भारतीय दर्शन में कुछ को छोड़ का लगभग सभी पारंपरिक एवं समकालीन दार्शनिक कर्म-दर्शन के सिद्धांत को मानते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता एक चिंतन के लिए सबसे प्रमुख एवं प्रचलित शास्त्र है जिसमें कर्मयोग के सिद्धांत पर अनेक भाष्यकारों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से व्याख्या किया है। गीता के अनुसार जो जैसा कर्म करता है, उसको उसके अनुसार फल भुगतना पड़ता है। अच्छे कर्मों का फल सुख एवं सौभाग्य के रूप में जबकि बुरे कर्मों का फल दुःख एवं दुर्भाग्य के रूप में अवश्य ही भोगना पड़ता है। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है – **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतु र्भूर्मा ते संगोस्त्वकर्मणि ।।"** (गी. 2/47) अर्थात् कर्म करने में हमारा अधिकार होता है इनके फलो में नही, इसलिए कर्म के फल प्रति असक्त नहीं होनी चाहिए, न कर्म नहीं करने के प्रति प्रेरित होना चाहिए। मनुष्य के अस्तित्व में कार्य निहित है प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रूप में कार्य करते हैं, यधपि कार्य अपरिहार्य है। व्यक्ति को फल को इच्छा से रहित होकर कार्य करने चाहिए। हमारी आसक्ति कर्म में होना चाहिए न कि फल में। **"न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।"** (गी. 3 /5) कार्य जीवन का एक बड़ा हिस्सा है कार्य किए बिना कोई भी प्राणी नही रह सकता। अच्छे-बुरे, विचार एवं भावनाएँ द्वारा किये हुए कार्य के अनुरूप उसके परिणाम भी होते हैं।

बाल गंगाधर तिलक ने यह महान रचना 'गीता रहस्य' उस समय की थी जब भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात हो रहे थे, इस स्थिति में भारत की आत्मा भारतीय-संस्कृति सुरक्षित होने की प्रतिक्षा कर रही थी। बाल गंगाधर तिलक ने श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य नामक ग्रन्थ उस समय लिखी जब वे

माण्डले जेल (वर्मा) में थे। इस समय भारत पूरी तरह गुलामी के जंजीर में जकड़ी थी। गीता के प्रति उनका प्रेम बचपन से ही था। गीता से उनका परिचय तब हुआ जब उनके पिता जी अंतिम रोग से आक्रांत हो कर शैय्या पर पड़े थे, तब उन्होंने 'भाषा विवृत्ति' नामक भगवद्गीता की मराठी टीका अपने पिता जी कि सुनाते थे। उनकी आयु उस समय सोलह वर्ष की थी।" (श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य, 15) उसी समय गीता के प्रति उनका प्रेम बढ़ा एवं उसको और जानने के संबंध में जिज्ञासा बढ़ी। उसके बाद उन्होंने गीता पर लिखे गए कई भाष्यों का अध्ययन किया। उन्होंनें गीता के संस्कृत, माराठी, अंग्रेजी अनेक भाष्य पढे, जिसको पढ़ने के पश्चात उनके मन में शंका जो उत्पन्न हुई कि जो गीता स्वजनों से युद्ध करने को अपराध समझने वाले और युद्ध से इंकार करने वाले अर्जुन को युद्ध में प्रवृत्त करने लिए बताई गई है, तथा ब्रहम-ज्ञान, भक्ति-मार्ग से मोक्ष विधि का भी विवेचन किया गया है। (गी.र., प्रस्तावना) इसलिए उन्होंनें अन्य टीकाओं और भाष्यों को अलग कर मात्र गीता पर ही स्वतंत्र विचार किया तब उन्हें बोध हुआ कि गीता का मूल मात्र निवृत्ति प्रधान नही है बल्कि वह कर्म प्रधान है। गीता में 'योग' शब्द 'कर्मयोग' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। गीता में कहा गया है – "जो पुरुष आत्मा अर्थात् स्वयं में ही तृप्त एवं संतुष्ट हो, उसके लिए कोई कर्त्तव्य नही रहता।" (गी., 3/17) "उसका न कर्म करने का प्रयोजन रहता है न कर्म करने का नही करने का प्रयोजन रहता है।" (गी., 3/17-18) भगवान ने भी कहा है कि "आसक्ति को त्याग कर अपने कर्म के प्रति कर्त्तव्य भाव से निरंतर कर्म करते रहना चाहिए।" (गी., 3/19) उन्होंनें गीता रहस्य ग्रंथ की रचना इसलिए की, जिससे पाठको की शंका को दूर किया जा सके है कि गीता निवृत्ति मार्ग नही यह प्रवृत्ति मार्ग को प्रशस्त करती है।

गीता का प्रतिपादन धर्म एवं सत्य के लिए किया गया था, परंतु जिस काल में एवं जिस परिस्थिति में गीता का स्वरूप बताया गया था, उस देश-काल में काफी अंतर था। इसलिए गीता उस समय बताई गई थी जब किसी भी कर्म को अच्छा-बुरा समझने से पहले उसके महत्व को समझना आवश्यक था, न कि "कर्म करना चाहिए अथवा नही करना चाहिए।" (गी. र.,17) यह विचारणीय तथ्य है है कि इस प्रकार की समस्या अथवा दुविधा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आती है। हम उस दुविधा में पड़ जाते हैं कि कोई कार्य करना सही है या नही, तब बड़ी विकट परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है तथा निर्णय लेना कठिन हो जाता है, इसप्रकार की परिस्थिति में कर्म-मार्ग जिसे श्री कृष्ण ने प्रवृति-मार्ग के सन्दर्भ में बताया है, उसे अपनाने की बात गीता-रहस्य में बताई गई है। भारत की अधीनता और समाज की स्थिति देखने के बाद इस ग्रंथ को लिखना आवश्यक हो गया था। भारत की जनता को जागृत होने की आवश्यकता थी, उन्हें कर्म-मार्ग पर जाने आवश्यकता थी।

भारत की जनता में कर्म के बीज बोने का वे निरंतर प्रयास करते रहे। इन्होंने दो ग्रन्थ 'द ओरायन' तथा 'द आर्टिक होम इन वेदाज' अंग्रेजी में लिखे, परन्तु गीता-रहस्य मराठी में इसलिए लिखी गई क्योकि उनके अनुसार "गीता-रहस्य अपने भाई-बंधुओं के लिए था, अंग्रेजों के लिए नहीं, जो भाई-बन्धु कर्मयोग भूल गए हैं जिसके कारण भारत की ऐसी दशा हो गई है उनको कर्मयोगी बनाना है।" (hindivivek.org) अर्जुन ने भगवान से स्पष्ट कहते हैं कि भगवन, मुझे दो-चार मार्ग बता कर उलझन में मत डालिए, कोई एक मार्ग बताइए जो मेरे लिए कल्याणकारी हो।"(गी., 3/2) गीता के कर्मयोगशास्त्र का विवेचन इसलिए किया गया था जब अर्जुन के मन में यह शंका हुई कि युद्ध में उनके हाथों से उनके अपने गुरुजन, मित्र, बांधव आदि का नाश हो जाएगा तो क्या यह उचित होगा या अनुचित होगा ? यह शंका मन में आने पर उन्होनें युद्ध से सन्यास लेने का निश्चय किया। तब भगवान ने कहा कि समय पर कि गए कार्य का त्याग करना मूर्खता एवं दुर्बलता का सूचक है। इससे न तो तुम्हे स्वर्ग मिलेगा उल्टे दुष्कृर्ति होगी।" (गी., 2/2) परंतु इससे भी अर्जुन के मन की शंका का समाधान नही हुआ। तब भगवान ने थोड़ा सा किया उपहास किया कहा – **"अशोच्यानन्तशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।"** (गी., 2/11) अर्थात् उन्होंने कहा कि जिस बात का शोक नही करना चाहिए तू उसी बात का शोक कर रहा है और पंडितों जैसी ब्रह्म-ज्ञान की बात करता है। अगर हम विचार करे तो अर्जुन की चिंता निराधार नही थी, क्योंकि इस प्रकार की उलझन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आती है। 'क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए' इस प्रकार की दुविधा में कर्म एवं अकर्म की चिंता सताने लगती हैं। ऐसी परिस्थिति में मनुष्य कर्म का ही त्याग करने लगता है, किंतु कर्म को करना ही छोड़ देना उचित नहीं है। इसलिए भगवान ने अर्जुन को उपदेश दिया कि ऐसी युक्ति अर्थात् योग को स्वीकार करना चाहिए, जिससे संसारिक कर्मों का लोप भी न हो तथा कर्म का आचरण कर किसी पाप अथवा बंधन में भी न पड़े।" (गी.र., 34) इस सन्दर्भ में कहा है -

"बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते । तस्माद्योगाय युज्यस्व योग: कर्मसु कौशलम् ।।" (गी., 2/50) भगवान कहते हैं पाप-पुण्य दोनों का त्याग कर योग का मार्ग अपनाओ जिसमे कर्म करने का विवेक हो। इसप्रकार का कर्म-विवेक अर्थात् समत्व रूप योग ही कर्मो में कुशलता है। इस समत्व रूप योग को स्वीकार कर योग में लग जा। यही कर्मयोग है अर्थात् कर्म-बंधन से छूटने का उपाय है।

निष्कर्ष (Conclusion) -

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में हम देखते है कि तिलक ने योग को भक्ति और ज्ञान के दो साधन मार्ग से अलग माना है। तिलक की गीता एक 'कर्म-योग-शास्त्र, सांख्य-योग और कर्म-योग की परिभाषाओं में आत्म-विरोधाभासों की ओर इंगित नहीं करता है, बल्कि तिलक कर्म-योग को कर्म-योग के साथ-साथ सांख्य-योग के साधन के रूप में बताते हैं। तिलक के अनुसार, गीता की विषय-वस्तु कर्म-योग है क्योंकि यह ज्ञान या भक्ति मार्ग में लगे हुए सभी प्राणियों में आत्मा की सार्वभौमिक पहचान की प्राप्ति के द्वारा समानता प्राप्त करने के दो सिद्धांतों पर व्याख्या करता है कार्य एवं दूसरा सभी कर्मों का त्याग किए बिना अपने कर्त्तव्यों का पालन करते रहना। कर्म-निष्ठा जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है और इसलिए मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य कर्मयोग होना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि गीता में कर्म-योग को ही उच्चतम योग-मार्ग माना गया है, तथा इसे सांख्य-योग से श्रेष्ठ बताया है।

संदर्भ (References) -

Bal Gangadhar Tilak, ka jeevan parichay. https://sugamgyan.com/post/bal-gangadhar-tilak-biography, Retrieved on : 29 Dec., 2022

Brown, Donald Mackenzie (1965) The Nationalist Movement: Indian Political Thought from Ranade to Bhave. California. University of California Press.

Gahmari. Gopal Ram (24 June, 2016*). Baal Gangaadhar Tilak Par Darj Ek Aitihaasik Mukadame Ka Aankhon Dekha Haal.* (Report) https://web.archive.org/web/20200319091410/https:/satyagrah.scroll.in/article/101104/how-tilak-got-bail-in-the-words-of-gopal-ram-gehmari

Ghosh, Arvind (24 July, 2020). Aravind Ghosh Ke Saamaajik Vichaar. https://www.mppscexams.com/2020/07/arvind-ghosh-upsc-in-hindi.html

"Bhagavad Gita Mahatmya By Sri Adi Shankaracharya." 31 Dec. 2014, https://archive.org/details/BgMahatmyasriSankaracharya.

"Srimad Bhagavad Gita Rahasya - BG Tilak - Volumes 1 and 2." 31 Dec. 2014, https://archive.org/details/SrimadBhagavadGitaRahasya-BgTilak-Volumes1And2.

Pednekar, Amol. Geeta Rahasy Karmayog Ko Kiya Punarsthaapit. https://hindivivek.org/23611 Retrieved on : 29/12/2022

Rai, Avinash (23 July, 2020). *Svaraaj Hamaara Janmasiddh Adhikaar Hai, Ham Ise Lekar Rahenge, Jaanen Mahaan Neta Ke Lokamaany Banane Kee Kahaanee.* https://www.india.com/hindi-news/special-hindi/bal-gangadhar-tilak-birth-anniversary-freedom-movement-lokmanya-tilak-4092057/

Tilak, Bal Gangadhar (1965). Srimad Bhagavadgita-Rahasya or Karma Yoga Shastra.

Tilak, Bal Gangadhar (2011). The Arctic Home in the Vedas., Pune. Messrs tilak Bros.

Tiwari, Vinay (23 July, 2019). *Bal Gangadhar Tilak- Aaj Hee Ke Din Janmen The Svaraaj Mera Janmasiddh Adhikaar Hai Ka Naara Dene Vaale*. https://www.jagran.com/news/national-swaraj-was-born-on-the-day-i-was-born-and-i-will-continue-to-take-it-bal-gangadhar-jagran-special-19425004.html